

मंगवाई जिन्होंने कहा कि वह कारखाना लगाने के लिये तैयार हैं। उसके बाद आप ने सब कमेटी मुकर्रर की, उन ऐप्लिकेशन्स की दुबारा छांट करने के लिये? आप डाग इन दि सैन्जर पालिसी क्यों ऐडाप्ट करते हैं और अधिक कारखाने लगाने की इजाजत क्यों नहीं देते ?

श्री फखरुद्दीन अली अहमद : आनरेबल मेम्बर ने कई बातें कही हैं और मैं इस काम के लायक हूँ या नहीं यह उनकी ओपीनियन पर तो मुन्हसर नहीं है। जहां तक हमारी कीमतों का ताल्लुक है, यह पब्लिक सेक्टर में नहीं है, प्राइवेट सेक्टर में है और वह अपनी कीमतों पर बेच रहे हैं। उनकी कास्ट आफ प्रोडक्शन क्या होती है, इसको देखकर वह कीमत मुकर्रर करते हैं। जहां तक इस बात का ताल्लुक है कि हमारे यहां कीमतें कितनी ज्यादा हैं मैंने कहा कि मैं नहीं बतला सकता कि वह किस कदर ज्यादा हैं क्योंकि इस वक्त वह फिगर मेरे पास नहीं हैं। फिर हमारे यहां खाली स्कूटर ही नहीं बन रहे हैं, दूसरी चीजें भी बन रही हैं, उनमें भी यही हालत है। हमारे यहां कास्ट आफ प्रोडक्शन इसलिये ज्यादा है कि हम छोटी तादाद में चीजों को बना रहे हैं। जापान इटली वगैरह में लार्ज स्केल पर प्रोडक्शन होता है इसलिये वहां पर दाम कम हैं। जहां तक डिमांड का ताल्लुक है, प्लेनिंग कमिशन एक टार्गेट रख कर कि किस चीज की डिमांड कितनी है और सप्लाय कितनी होगी, हम को एक मिक्दर बतलाता है कि कितने बनाने चाहिये। उसके बाद वह बनाई जाती है। मैं आप से यह भी कहना चाहता हूँ कि जहां तक इस बात का ताल्लुक है कि लाइसेंस क्यों नहीं दिये गये, लाइसेंस इस पर डिपेन्ड करता है कि कितना फारेन एक्सचेंज अवेलएबल है और वह फारेन एक्सचेंज किस किस को दिया जाये, सारी बात इस पर मुनहसर होती है। अगर सारा फारेन एक्सचेंज स्कूटर के लिये ही दे दिया जाये तो दूसरी चीजों के लिये क्या दिया जायेगा?

SHRI LILADHAR KOTOKI : The Hon. Minister has stated that due to the strike in the tyre factory the Government has permitted the import of tyres. May I know wheater any steps have been taken to resolve the strike to that scarce foreign exchange is not frittered away in importing tyres which can be manufactured here?

SHRI F. A. AHMED : Steps have been taken by both the Central and the State Governments to bring the two parties together and persuade the strikers to give up the strike while the dispute is adjudicated by the Conciliation Board but, so far as the labourers are concerned, they have not taken any action to resume work.

MR. SPEAKER : Next question. Shri Chandra Shekhar Singh.

SHRI K. N. TIWARY : Sir, this question should not be taken up because there is no Bihar Government now.

MR. SPEAKER : Shri Chandra Shekhar Singh is absent. Shri Bhogendra Jha—absent. Both are absent. So, he need not worry. It is not taken up.

IMPORT OF SYNTHETIC YARN

*691. **SHRI BAL RAJ MADHOK :** Will the Minister of COMMERCE be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the State Trading Corporation has been importing synthetic yarn from Japan and Italy at prices higher than the standard international prices of this yarn;

(b) if so, the difference between the standard international price and the price being paid by the State Trading Corporation on different qualities of imported yarn;

(c) whether it is also a fact that it has resulted in huge loss of foreign exchange to the country; and

(d) if so, the steps taken to prevent the loss in future?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI MOHD. SHAFI QURESHI) : (a) and (b). S.T.C. has made purchases from Japan and Italy at competitive prices.

(c) No, Sir.

(d) Does not arise.

श्री बलराज मधोक : मंत्री महोदय ने जो जवाब दिया पता नहीं उसको गलत कहूँ या सफेद झूठ कहूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या यह तथ्य नहीं है कि एक महीना हुआ व्यापारियों का एक डेपुटेशन आप के पास आया और उस ने कहा कि बाहर के देशों से एस टी०सी० जिस भाव पर यार्न खरीदता है, उससे सस्ते भाव पर वह देने के लिये तैयार हैं और वह सप्लाई कर सकते हैं, लेकिन आपने इजाजत नहीं दी। अगर आप ने इजाजत नहीं दी, तो मैं जानना चाहता हूँ कि क्यों नहीं दी ?

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : असल बात यह है कि नाइलन की एक किस्म नहीं है, उसकी मुख्तलिफ किस्में हैं और 15 डिनेअर, 20 डिनेअर, 40 डिनेअर से ले कर 100 डिनेअर तक जाती हैं और हर किस्म की अलग-अलग कीमत होती है। यह मुमकिन हो सकता है कि बेराइटी के फर्क से कीमतों में फर्क हो। लेकिन यह कहना कि हम ज्यादा कीमत दे कर जापान से खरीदते हैं, ठीक नहीं है। मैं माननीय सदस्य की इत्तिला के लिये अर्ज करूँगा कि हम यहां पर जो लोकल धागा अपना बनाते हैं उसकी कीमत 125 रु० पर के० जी० होती है और एस० टी० सी० 122 रु० पर सप्लाई करता है 15 डिनेअर का। इटली और जापान से हम जो धागा मंगाते हैं वह 40-41 रु० पर के० जी० (per K.G.) होता है। उसके बाद 100 परसेन्ट कस्टम ड्यूटी होती है, 38 परसेन्ट एक्साइज ड्यूटी होती है, उसके बाद स्टोरेज वगैरह का भी खर्च होता है, इस तरह से वह करीब 120 रु० के जी पड़ता है।

श्री बलराज मधोक : मंत्री महोदय ने कहा कि ज्यादा अन्तर नहीं पड़ता। मेरा कहना यह है कि आज जो इंटरनेशनल कीमत है और जिस भाव पर यार्न हम को मिल सकता है उसके ऊपर हम ड्यूटी वगैरह क्या लगाते हैं, यह अलग बात है—उसकी अपेक्षा जो यार्न एस० टी० सी० दे रहा है उस की कीमत अधिक है, कहीं 40 परसेंट और कहीं

30 परसेंट। अगर सरकार इससे सहमत नहीं है तो क्या मंत्री महोदय इस के लिये तैयार हैं कि कोई पार्लियामेन्टी कमेटी इस मामले की जांच करने के लिये मुकर्रर की जाय कि कितना यार्न खरीदा गया है, उस की इंटर-नेशनल प्राइज क्या है और किस भाव के ऊपर यहां पड़ता है। अगर मंत्री महोदय इस बात के लिये तैयार नहीं हैं तो हमें कहना पड़ेगा कि जो कुछ उन्होंने कहा वह गलत है।

बाणिज्य मंत्री (श्री दिनेश सिंह) : माननीय सदस्य जानते हैं कि पार्लियामेंट की किसी कमेटी के बारे में हमने कभी इन्कार नहीं किया है, बल्कि हर वक्त हमारी यह कोशिश रही है कि इस सदन के सदस्य अच्छी तरह से हर बात का इत्मीनान कर लें कि जो काम हम कर रहे हैं वह ठीक है या नहीं। जो काम मंत्रालय में हम कर रहे हैं वह किसी से छिपा नहीं है।

जहां तक उन्होंने कीमतों की बात कही, मैं उस के सम्बन्ध में दो बातें साफ कर देना चाहता हूँ। जब भी हम दुनिया के दूसरे देशों से सिंथेटिक यार्न मंगाते हैं तब हर एक देश में उसकी अलग-अलग कीमत होती है। यह हो सकता है कि जब हम ने जापान से मंगाया या दूसरे किसी देश से मंगाया उस वक्त अगर हम उसको यूनाइटेड स्टेट्स से मंगाते तो कीमत में कुछ फर्क होता। लेकिन जहां से हमने मंगाया वहां हमने टाइड एंड का रुपया इस्तेमाल किया है। वहां हमने फ्री फारेन एक्सचेंज का रुपया खर्च नहीं किया है। ऐसा करते तो मुमकिन है कि कीमत में कुछ फर्क होता। लेकिन जिन देशों से हमने मंगाया है वहां पर उस वक्त दाम कम था यह सही नहीं है, बल्कि हम को जो कीमत पहले बतलाई गई थी, उस से 15-20 परसेन्ट कीमत कम करा कर हमने उस माल को मंगाया है। हमारे पास उसके पूरे आंकड़े रखे हैं। यह कहना कि उस देश में उस वक्त कीमत कम थी और हमने ज्यादा दी, यह सही नहीं है।

SHRI BAL RAJ MADHOK : I question the veracity of this answer. Let him appoint a committee and find out the full facts.

SHRI S. R. DAMANI : The production of synthetic yarn has increased considerably in the last two years and large quantity of our yarn is being smuggled out. In view of this, may I know what is the necessity of importing this yarn and for what purpose it is being used?

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI : Against the total requirement of 10 million kilograms we are producing only 2.4 million kilograms in the three factories that we have for nylon. Naturally, therefore, we have to import about 6-7 million kilograms. It is becoming necessary because there is a gap between demand and supply. New factories also are coming up. As to why we are importing this nylon yarn, it is because our spinners and weavers require this yarn; otherwise, there will be idle capacity in the industry and there will be unemployment.

श्री मधु लिमये : मैं जानना चाहता हूँ कि क्या सरकार का ध्यान इस बात की ओर गया है कि इस वक्त हमारे देश में नाइलन और सिंथेटिक यार्न तैयार करने के लिये जो कारखाने हैं उनको बहुत ज्यादा मुनाफा हो रहा है, जैसा कि जे के ग्रुप की एक रिपोर्ट में दिया है कि 7 करोड़ की बिक्री पर उनको 4 करोड़ का मुनाफा हुआ। यदि इस मुनाफे का इस्तेमाल और पैदावार बढ़ाने के लिये किया जाता तो शायद यह आयात न करना पड़ता। इसके साथ-साथ मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि क्या उनको इस बात का पता है कि एस टी सी द्वारा जो यार्न मंगाया जाता है उस पर एस टी सी काफी मुनाफा कमाती है इसलिए उसके बाजार में दाम बहुत ज्यादा हैं और इसी वजह से तस्कर व्यापार से बहुत ज्यादा नायलोन यार्न इस वक्त देश में आ रहा है? क्या यह भी एक कारण नहीं है कि एस टी सी के यार्न के लिए कोई ग्राहक नहीं है, उसको खरीदने वाला कोई नहीं है? अगर मंत्री महोदय मेरे साथ आयेंगे तो दमन

आदि इलाके में बड़े पैमाने पर मैं नायलोन यार्न उनको पकड़वा दूंगा। यह तभी हो सकता है जब वह मेरे साथ आयें।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : जहाँ तक नायलोन का धागा बनाने वाले कारखानों का ताल्लुक है, वे ज्यादा मुनाफा कमाते हैं, इसके बारे में मैं वसूक के साथ इतना ही कह सकता हूँ कि वे नुकसान में नहीं चल रहे हैं, फायदा उनको जरूर हो रहा है।

जहाँ तक इस बात का ताल्लुक है कि हम क्यों यार्न इम्पोर्ट करते हैं मैं पहले ही वजाहत के साथ कह चुका हूँ कि चूँकि इसकी कमी है और हमारी लोकल सप्लाई कम है, इसलिए हम को इम्पोर्ट करना पड़ता है।

श्री मधु लिमये : आप पता नहीं रखते हैं?

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : जहाँ तक फायदे का ताल्लुक है, एक नैचुरल फिनीमिनन है कि जब सप्लाई शार्ट होती है और डिमांड बहुत ज्यादा होती है तो प्राइस नैचुरली हाई जाती है। जो मांग है उसको मीट करने के लिए हम इम्पोर्ट भी कर रहे हैं और और कारखाने भी कायम किये जा रहे हैं ताकि नायलोन की कीमतें कम हों।

श्री मधु लिमये : मेरे सवाल का जवाब नहीं आया है। एस टी सी अपने यार्न पर बहुत ज्यादा मुनाफा लेती है इसलिए तस्कर व्यापार को, स्मगलिंग को उत्तेजन मिल रहा है और इतने बड़े पैमाने पर नायलोन यार्न आ रहा है कि इनका जो माल है वह बिक नहीं रहा है। मैंने कहा है कि समुचे पश्चिम के किनारे पर तस्कर करने वाले व्यक्तियों को मैं पकड़वाने के लिए तैयार हूँ, अगर आप मेरे साथ आयें तो।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : जहाँ तक स्मगलिंग का ताल्लुक है इससे इन्कार नहीं किया जा सकता है कि कुछ न कुछ माल स्मगल हो रहा है। जहाँ तक इस बात का ताल्लुक

है कि एस टी सी ज्यादा कीमतें बसूल करती है नायलोन की मैं माननीय सदस्य की तबज्जह इस तरफ दिलाना चाहता हूँ कि जहाँ पर लोकल सिंथेटिक यार्न का भाव निरलोन और जे०के० का 125 रुपये पर किलो पन्द्रह डेनियर है।

श्री मधु लिमये : उनका भी घटाओ।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : वहाँ पर एस टी सी का 120 रुपया 122 रुपया है यानी चार पांच रुपये कम दाम पर वह बेच रही है। इससे एस० टी० सी० को ज्यादा फायदा नहीं होता है। बल्कि एस० टी० सी० तो यह चाहती है कि अगर सप्लाय ज्यादा हो जाए और दाम कम हो जायें तो फिर लोकल धागे की कीमतें भी काफी कम हो जायेंगी।

SHRI B. SHANKARANAND : Just now the hon. Minister said that synthetic yarn is being imported because there is a wide gap between the demand and supply and it is being imported for new factories that are coming up. May I know what are the new factories that are coming up that this yarn is being imported?

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI : My hon. friend is confusing yarn with fabric. I said, for the manufacture of nylon yarn, not for the manufacture of nylon fabric.

SHRI VIKRAM CHAND MAHAJAN : Is it a fact that there are many applications pending for the setting up of new plants and, if so, why the permission has not been granted so far?

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI : The matter is under the consideration of the Government and it will be decided shortly.

श्री प्रेम चन्द बर्मा : अभी माननीय सदस्य ने कहा कि सात करोड़ की बिक्री पर एक कम्पनी को चार करोड़ का मुनाफा है। इसका जवाब मंत्री महोदय ने नहीं दिया है। मैं जानना चाहता हूँ कि मोनोपोलिस्टों की मुनाफाखोरी को रोकने के लिए सरकार क्या कदम उठाना चाहती है।

क्या यह भी सच नहीं है कि एस टी सी जो माल बेचती है उस माल का भाव भी इसीलिए कम नहीं करती है ताकि उन लोगों का मुनाफा कम न हो ? मैं जानना चाहता हूँ कि कितने परसेंट मुनाफा एस टी सी को यार्न पर होता है ?

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : जहाँ तक प्राइवेट कम्पनी का ताल्लुक है और इसका ताल्लुक है कि कितना मुनाफा उसको हो रहा है उसका जवाब तो इस वक्त नहीं दिया जा सकता है, लेकिन जहाँ तक एस टी सी का ताल्लुक है मैं अर्ज कर चुका हूँ कि वह मुनाफे के तौर पर इसको नहीं बेच रही है बल्कि इस वक्त जो शार्ट सप्लाय है मुल्क में उसको पूरा करने के लिए एस टी सी बाहर से मंगा रही है।

श्री प्रेम चन्द बर्मा : प्राफिट कितना रखती है।

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : बहुत कम प्राफिट रखती है। मेरा ख्याल है एक परसेन्ट से ज्यादा होगा।

SHRI RANGA : What margin of profit are they making? Why don't you give a straight answer?

MR. SPEAKER : He requires notice.

श्री हरदयाल बेवगुण : मंत्री महोदय को नायलोन यार्न की इकोनोमिक्स का कुछ ज्ञान अवश्य होगा। सिंथेटिक फाइबर पांच रुपये किलो के हिसाब से आ कर उसका यार्न 125 रुपये प्रति किलो यहाँ मिलें बेचती हैं। बजाय उनकी मुनाफाखोरी को रोकने के इन्होंने एस० टी० सी० के द्वारा मंगाये गये यार्न का भाव भी 120 रुपये किलो रखा है और कोई कहता है कि वह 300% मुनाफा लेती है और कोई कहता है कि पांच सौ परसेन्ट लेती है और इस मुनाफाखोरी में वह यहाँ के कारखानेदारों का मुकाबला कर रही है। इसकी वजह से एस टी सी ने जो नायलोन यार्न मंगाया है वह उसके भंडारों में पड़ा हुआ है, लोग उसको उठा नहीं रहे हैं। मैं जानता चाहता हूँ कि क्या यह सही है ?

मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि यह सही नहीं है कि एस० टी० सी० के अफसरों के खिलाफ इन्क्वायरी हो रही है कि फारेन एक्सचेंज उन्होंने विदेशी बैंकों में रखा हुआ है ?

श्री मुहम्मद शफी कुरेशी : जहां तक इसका ताल्लुक है कि एस० टी० सी० का माल उसके गोदामों में पड़ा हुआ है, मैं माननीय सदस्य की इत्तिला के लिए बता देना चाहता हूँ कि जहां छः करोड़ रुपये के लाइसेन्स इशू किये गए वहां पर कोई पांच करोड़ तीस लाख का माल आ चुका है और उसकी तक्सीम जो है वह इस प्रकार है ।

पावर लूमज सेक्टर 4 करोड़ 18 लाख रुपया ।

कोजोप्रेटिव सेक्टर 43 लाख रुपया ।

हैन्डलूम सेक्टर 33 लाख रुपया ।

होजरी सेक्टर 36 लाख रुपया ।

यह तक्सीम हो चुका है इससे साफ हो जाता है कि एस० टी० सी० के पास कोई स्टॉक्स मौजूद नहीं है ।

SHRI V. KRISHNAMOORTHY : There are about Rs. 5 crores worth of Bleeding Madras, which was produced for exporting to other countries. . . .

MR. SPEAKER : From nylon to Bleeding Madras! (*Interruptions*).

SHRI V. KRISHNAMOORTHY : May I know from the hon. Minister whether any firm has offered to export the entire unsold quantity of Bleeding Madras in lieu of import of synthetic yarn and if so, what was the reaction of the Government ?

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI : The question relates to Bleeding Madras. It is a fact that we were exporting Bleeding Madras, worth Rs. 10 crores every year, but because of overzealousness of exporters, there was a huge stock accumulated in the U.S.A. and the exports have come down to Rs. 10 to 15 lakhs. There is a large stock lying in Madras, for which an offer was made by a particular party, but the offer was very fantastic; the party said that it would take the entire quantity and export it, but it should be permitted to

import hundred per cent nylon yarn, so that it could sell it here with 300 to 400 per cent premium. We did not allow that.

SHRI RANGA : Will the Government be prepared to supply information, if not now, at least later, and place it on the table of the House, at what price the STC purchases this artificial yarn, synthetic yarn, in Japan and other countries and at what price it is selling here and what margin of profit it is making. In view of the fact that it imports and supplies twice as much as is produced in our country, it ought to be in a position to reduce the total price at which it is made available to the consumers by making less profit, by charging much less than what they are charging today. My hon. friend said that they charge only Rs. 2 to 3 less than what the factories are charging. Why should they not charge so much less in view of the fact that the factories are making so much of profit ?

SHRI DINESH SINGH : My hon. colleague has given an idea of the cost at which we had imported some of this yarn. The point in this is that when we import yarn, to it we have to pay 100 per cent duty and 38 per cent excise, and that already raises the price of the yarn higher. My hon. friend, Shri Madhu Limye, raised the question of smuggling. Naturally smuggled yarn is free of these and, therefore, there is an imbalance in that. Now the question is that there is a price difference between the imported yarn and the yarn which is manufactured here, between anything that is imported and the local production; we have just had a question about scooters, about the price difference that exists in other countries and here; that is because they have the economics of large scale and other things. If we start selling yarn at the price at which we have imported, then what will happen? We have had a number of questions in this House; the hon. members have said that we are, by importing goods, to that extent, stifling the local production; the local production is being stunted because of liberal import policy and, therefore, the policy has got to be geared in such a way that there is not much price difference. If we sell the yarn at a price at which we have

imported, then it is resold in the market at a higher price and somebody else takes away that. We have had this question in this House.

The STC is trying to maintain a price lower than the price at which the manufacturing companies are selling so that. . .

SHRI RANGA : They can sell it even at a much lower price.

श्री मधु लिमये : जे० के० वगैरह की प्राइस को घटाओ।

SHRI DINESH SINGH : That is entirely different. We can go into the question of how much more the local price should be. We shall constantly bear that in mind.

MR. SPEAKER : Now, short notice question.

SHRI NAMBIAR : What is this term 'Left Communist Nagas'?

MR. SPEAKER : I do not know. Let us hear from the hon. Minister.

SHRIMATI TARKESHWARI SINHA : I did not know that the hon. Member was in transcendental meditation himself and, therefore, he has not realised it.

MR. SPEAKER : Now, we are taking up the short notice question.

SHORT NOTICE QUESTION

SINKING OF STEEL FOUNDRY AT KULTI

S.N.Q. 10. **SHRIMATI TARKESHWARI SINHA** :

SHRI S. S. KOTHARI :

SHRI NIHAL SINGH :

SHRI BENI SHANKER

SHARMA :

SHRI RABI RAY :

Will the Minister of INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND COMPANY AFFAIRS be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the steel foundry plant of the iron and steel company at Kulti near Asansol has started sinking rapidly; and

(b) if so, the action Government propose to take in this matter to avoid damage to the entire steel plant?

THE MINISTER OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND COMPANY AFFAIRS (SHRI F.A. AHMED) : (a) and (b). A statement is laid on the Table of the House.

STATEMENT

It has been reported that between 2130 hrs. on 9th March, 1968 and 2100 hrs. on 10th March, 1968, cracks appeared at several points of the land on which the Steel Foundry of M/s. Indian Iron and Steel Co., Kulti stands. There was also subsidence of the land at several points in depths varying from one to three feet during this period. No further subsidence occurred after 2100 hrs. of 10th March, 1968. Consequent on the subsidence of the land, certain parts of the structures of the foundry were damaged and bent at different points. A team of experts has been appointed by the Chief Inspector of Mines to ascertain the causes from the subsidence and its report is awaited. Deputy Chief Inspector of Factories, Asansol, Government of West Bengal, is also enquiring into the matter and his report is awaited.

SHRIMATI TARKESHWARI SINHA : The hon. Minister has assured us that a team has been appointed. But meanwhile, may I know the present loss and what steps Government propose to take to see that no further damage is done to the structure of the plant?

SHRI F.A. AHMED : The value of production has been reported to be about Rs. 35,000 per day. As regards the actual loss on account of the damage to the foundry, we have appointed a team of experts and we are awaiting their report. When we received their report it will be possible for me to indicate the actual loss that has occurred.

SHRIMATI TARKESHWARI SINHA : May I know whether Government had any information previously about mining being done in that area and whether Government or the company was ever aware that the land beneath had been mined, and, therefore, a large portion of land was lying as vacant mined area?

SHRI F.A. AHMED : If the company had this information they would never have set up this foundry there. As regards